डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, जोहानिन थियोलॉजी, सत्र 2, जोहानिन शैली, भाग 1

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा जोहानिन धर्मशास्त्र पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 2, जोहानिन शैली, भाग 1 है।

हम जॉन की शैली पर ध्यान देकर जोहानिन धर्मशास्त्र का अपना अध्ययन जारी रखते हैं।

मेरे पास विचार करने के लिए 11 बिंदु हैं। उनकी विशिष्ट शब्दावली, उनके व्याख्यात्मक नोट्स या संपादकीय नोट्स, गलतफहमियाँ, विडंबना, दोहरा अर्थ, दोहरा अर्थ, उलटा समानांतरवाद, शैली की विविधता, पुराने नियम के विचार, प्रतीकवाद, नैतिक, ऑन्टोलॉजिकल नहीं, द्वैतवाद और अतिशयोक्ति। सबसे पहले, विशिष्ट शब्दावली।

चौथे सुसमाचार की समृद्धि का एक हिस्सा इसकी विशिष्ट शैली है। मैं हमें जोहानिन शैली से परिचित कराने के प्रयास में निम्नलिखित विशेषताएँ प्रस्तुत करता हूँ, जो हमें उनके विचारों में प्रवेश कराती है - विशिष्ट शब्दावली।

जॉन का सुसमाचार उन शब्दों के संदर्भ में विशिष्ट है जो इसमें शामिल हैं, जो सिनॉटिक्स में नहीं हैं या बहुत कम हैं, और छोड़े गए शब्दों के संदर्भ में, जो सिनॉटिक्स में शामिल हैं। मेरी रूपरेखा जॉन के सुसमाचार पर सीके बैरेट की टिप्पणी से आती है - उस टिप्पणी के बारे में एक शब्द।

मुझे देखने दो। पैंतालीस साल पहले, एक युवा प्रोफेसर के रूप में, मैंने जॉन के सुसमाचार की खोज की। मैंने वास्तव में बाइबल कॉलेज या सेमिनरी में इस पर कोई कोर्स नहीं किया था।

और जिन दो स्कूलों में मैंने 35 साल तक पढ़ाया, मुझे लगता है कि मैं इस पर विशेषज्ञ था, हालाँकि मैं अंततः न्यू टेस्टामेंट का विद्वान भी नहीं था। लेकिन मैं इसमें शामिल हो गया, मैंने इसे आत्मसात कर लिया, मैंने इसके साथ काम किया। मैं अभी भी माध्यमिक साहित्य को बहुत अच्छी तरह से नहीं जानता, और मैं जॉर्डरवन बाइबिल थियोलॉजी सीरीज़ के हिस्से के रूप में एंड्रियास कोस्टेनबर्गर को इसका श्रेय दूंगा।

एंड्रियास कोस्टेनबर्गर, *द थियोलॉजी ऑफ जॉन एंड हिज लेटर्स* ने मुझे बहुत कुछ सिखाया है, क्योंकि मैं उस पर काम कर रहा हूँ। और वह मुझे एक बहुत बड़ा माध्यमिक साहित्य दिखाता रहता है, जिसके बारे में मुझे बहुत कम जानकारी है। लेकिन बार-बार, मैं बस आभारी हूँ कि एंड्रियास के निष्कर्ष मूल रूप से कई वर्षों तक बार-बार पाठ के साथ काम करने से मेरे अपने निष्कर्षों को दर्शाते हैं, जिसमें हाल ही में दो पाठ्यक्रम पढ़ाना शामिल है, आधे रास्ते में और फिर दूसरे आधे रास्ते में जॉन के सुसमाचार को यूक्रेन में जूम के माध्यम से RITE, रिफॉर्म इंटरनेशनल थियोलॉजिकल एजुकेशन के साथ पढ़ाया गया।

बैरेट की टिप्पणी। सी.के. बैरेट, या उनके मित्र के रूप में, जो मैं नहीं हूँ, मैं उनसे कभी नहीं मिला; किंग्सले बैरेट डरहम विश्वविद्यालय में हैं। वे विश्व स्तर के न्यू टेस्टामेंट विद्वान हैं।

इसलिए, उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम पर उनके दो खंडों को सभी द्वारा प्रेरितों के काम की पुस्तक में निर्णायक, सबसे बड़ी टिप्पणी के रूप में अनुशंसित किया जाता है। हालाँकि, वह आपको बताएगा कि लूका का क्या मतलब था, हालाँकि वह लूका को बहुत अच्छा धर्मशास्त्री नहीं मानता, बहुत मर्मज्ञ नहीं और इसी तरह, पॉल की तरह, और वह कभी-कभी लूका को सही भी करता है। खैर, यह जॉन पर उनकी टिप्पणी के बारे में मेरे ज्ञान के अनुरूप है।

मैं इसका इस्तेमाल कर रहा था। मैं इससे बहुत कुछ सीख रहा था क्योंकि उसके पास मुझे यह बताने की क्षमता थी कि जॉन का क्या मतलब था। जब मैं बाइबिल थियोलॉजिकल सेमिनरी के हॉल में घूम रहा था, तो एक छात्र जो शायद मुझसे ही जोहानिन रोग से पीड़ित था, ने पूछा, क्या आपने बैरेट की जॉन पर टिप्पणी का परिचय पढ़ा है? मैंने कहा, आप जानते हैं, मुझे नहीं पता।

मुझे ऐसा नहीं लगता। उन्होंने कहा कि मैं चौंक गया था। मैंने पूछा, किस बात पर? उन्होंने कहा कि उन्हें नहीं लगता कि जॉन ने जो बातें रिकॉर्ड की हैं, वे वास्तव में हुई हैं।

और मैं उससे भी ज़्यादा हैरान था। आप कमेंट्री पढ़कर यह नहीं जान पाएंगे। वह आपको यीशु के शब्दों और संकेतों का अर्थ बहुत ही शानदार तरीके से बताता है।

जोआनिन शोध के इतिहास के बारे में थोड़ा-बहुत। लाल सागर स्कॉल की खोज तक, अधिक उदार या आलोचनात्मक हलकों में, जॉन के सुसमाचार को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया गया था। सभी ने देखा कि यह पहले तीन सुसमाचारों की तुलना में अधिक धार्मिक था, लेकिन इसने इसे बनाया, जिसे मुख्यधारा के आलोचनात्मक विद्वानों द्वारा नकारात्मक रूप से व्याख्यायित किया गया था।

दूसरी शताब्दी, शायद दूसरी शताब्दी के मध्य या अंत में, और बुल्टमैन ने कहा, ऐसे विचार सामने आए थे जिन्हें तब से बदनाम किया गया है। खैर, पॉल के विचार और जॉन के विचारों के बीच समानता यह है कि वे दोनों रहस्यमय धर्मों या शुरुआती ज्ञानवाद की शिक्षा में भाग लेते हैं। शुक्र है कि अब उन सभी को खारिज कर दिया गया है, लेकिन जॉन के, विद्वानों के बीच जॉन के अध्ययन, विशेष रूप से अधिक मुख्यधारा के विद्वानों, को मृत सागर स्कॉल द्वारा पुनर्वासित किया गया है, जिसने नए नियम के समय एक यहूदी धर्म का प्रदर्शन किया जो जॉन के यहूदी धर्म से बहुत मिलता जुलता था।

इसलिए, उन्होंने अपने विचार इन सभी अलग-अलग यूनानी स्रोतों से नहीं लिए, बल्कि पुराने नियम से लिए, जैसा कि वे खुद कई जगहों पर कहते हैं, और अब जॉन के सुसमाचार पर एक नया नज़रिया है। मैंने न्यूयॉर्क में यूनिवर्सिटी थियोलॉजिकल सेमिनरी के रेमंड ब्राउन का ज़िक्र किया। निश्चित रूप से विश्वास का गढ़ नहीं, लेकिन वे जॉन के सुसमाचार के नए रूप का हिस्सा थे, और उनका दृष्टिकोण जॉन को समकालिक परंपरा से अलग परंपरा के रूप में मानना था,

लेकिन इसे संदेह का लाभ देना था, और यह बहुत अधिक था, यह इसे अविश्वसनीय मानने, जॉन द्वारा इसके धर्मशास्त्र का आविष्कार करने, और इसी तरह के अन्य विचारों से कहीं बेहतर था।

किसी भी मामले में, मैंने इन अलग-अलग लेखकों से बहुत कुछ सीखा है। हालाँकि मैं उनके विचारों, उनके व्यक्तिगत विचारों का समर्थन नहीं करता, जिन्हें मैं इतना भी नहीं जानता, लेकिन मैं जॉन के सुसमाचार को सीखना चाहता हूँ, और मेरा मानना है कि अगर ऐसा करना ज़रूरी है, तो मिस्रियों को लूटना चाहिए। किसी भी मामले में, सीके बैरेट, जॉन के अनुसार सुसमाचार पर भारी निर्भरता के साथ विशिष्ट शब्दावली। चौथे सुसमाचार की ग्रीक शैली अत्यधिक व्यक्तिगत है।

यह 1, 2 और 3 जॉन से काफी मिलता जुलता है, अन्यथा यह नए नियम में अकेला है। जॉन की शब्दावली छोटी है, लेकिन फिर भी, उनके कई सबसे अधिक बार इस्तेमाल किए जाने वाले शब्द तुलनात्मक रूप से सिनॉटिक गॉस्पेल में बहुत कम पाए जाते हैं। उदाहरण के लिए, प्यार करना और प्यार करना, अगापाओ, अगापे, जॉन में 44 बार, पहले तीन गॉस्पेल में कुल मिलाकर 30 बार।

मैं संख्याओं का सारांश दे रहा हूँ। सत्य, सत्य, सत्य, सत्य कहने के दो अलग-अलग तरीके, यूहन्ना में 45 बार और अन्य सुसमाचारों में 10 बार। जानना, जैसे कि परमेश्वर को जानना, यीशु को जानना, यूहन्ना में 56 बार।

यह या तो 56 या 57 है, जो कि पाठ्य भिन्नता पर आधारित है। मैं इसका उल्लेख भी नहीं करने जा रहा हूँ। जॉन में छप्पन बार, तीनों सुसमाचारों में मिलाकर लगभग समान संख्या। मैं हूँ; मैं हूँ का हर प्रयोग मैं हूँ कथनों में नहीं है, लेकिन यह वक्ता के रूप में यीशु की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

जॉन में 54 बार, पहले तीन सुसमाचारों में 34 बार। आप समझ गए होंगे कि काम करना जॉन में और संज्ञा काम में बहुत ज़्यादा बार आया है।

जीवन, यूहन्ना में बहुत कुछ। यहूदियों, यूहन्ना में 66 बार, बाकी तीनों सुसमाचारों में 16 बार। मुख्य रूप से यहूदी नेताओं की बात करता है जो यीशु से नफरत करते थे, हालाँकि कुछ अपवाद भी थे।

और हम सही समय पर निकोडेमस और अरिमथिया के यूसुफ के बारे में बात करेंगे। दुनिया, जॉन में 78 बार, मैथ्यू, मार्क और ल्यूक में 13 बार। हमारा दावा यह नहीं है कि इसका इस्तेमाल कभी भी जॉन की तरह नहीं किया गया है, लेकिन जॉन में इसकी प्रधानता बहुत ज़्यादा है।

न्याय करना, यूहन्ना में 19 बार, अन्य में 12 बार। गवाही देना, और फिर गवाही के लिए दो अलग-अलग शब्द, यूहन्ना में 39 या 40 बार, तीनों सुसमाचारों में 12 बार। परमेश्वर के पिता, पहले तीन में 60 या उससे ज़्यादा बार की तुलना में 118 बार।

मैं भेजता हूँ, जैसा कि यीशु को पिता ने भेजा था जिसने मुझे भेजा था, यूहन्ना में 32, पहले तीन सुसमाचारों में 15। प्रकाश, यूहन्ना में 23, पहले तीन सुसमाचारों में 15। इसके विपरीत, यूहन्ना में कुछ सामान्य समकालिक अभिव्यक्तियाँ दुर्लभ हैं या पूरी तरह से अनुपस्थित हैं।

बपतिस्मा, तीनों सुसमाचारों में दस बार, यूहन्ना में 0. बपतिस्मा शब्द. राज्य, यूहन्ना में 5, पहले तीन में 130.

दुष्टात्मा, यह एक दिलचस्प बात है। मत्ती में 11, मरकुस में 11, लूका में 23. यूहन्ना में 6, हर बार यह आरोप लगाया गया है कि यीशु में दुष्टात्मा है।

चौथे सुसमाचार में भूत-प्रेत भगाने का कोई उल्लेख नहीं है। याद कीजिए कि मैंने कैसे कहा था कि परीक्षण मौजूद हैं, लेकिन यीशु के जीवन के अंत में कम हो गए हैं? ठीक है, और वह पूरे समय परीक्षण में है? खैर, जॉन भूत-प्रेत भगाने का रिकॉर्ड नहीं करता है। वह खेल के मैदान को साफ करता है और उसी कारण से शैतान द्वारा यीशु को कोई प्रलोभन नहीं दिया जाता है।

क्योंकि तब, 13 से शुरू होकर, शैतान यहूदा को प्रेरित करता है, 13 की शुरुआत में। शैतान यहूदा में प्रवेश करता है; वह यहूदा को प्रेरित करता है, और वह 13 के अंत में यहूदा में प्रवेश करता है। वह बाहर जाता है और अपने स्वामी को धोखा देने का अपना धिनौना काम करता है।

यूहन्ना ने यीशु और इस संसार के राजकुमार के बीच की बड़ी लड़ाई का वर्णन किया है जिसे बाहर निकाल दिया गया है। इस तरह, शैतान को मसीह द्वारा पराजित किया जाता है, विडंबना यह है कि क्रूस पर, मनुष्यों के धर्मी। तीन पूर्व सुसमाचारों में तीस बार और यूहन्ना में 0 बार।

चमत्कार के समान शक्ति, जॉन में 30 से 0. दया दिखाना, दया करना, दया करना. जॉन में 0 से 40 गुना अधिक लगभग.

सुसमाचार और सुसमाचार का प्रचार करने के लिए, 0. लड़के, सुसमाचार शब्द की भ्रांति, शब्द की अवधारणा की भ्रांति मत करो। यूहन्ना कभी सुसमाचार का प्रचार नहीं करता, और यीशु कभी नहीं करता, है न? गलत। उसके पास वह शब्द नहीं है, और यह मत्ती, मरकुस और लूका में 22 बार है, 0. नहीं, वह सुसमाचार का प्रचार नहीं करता; वह सत्य लाता है जिसे पिता ने उसे भेजा था ताकि वह दुनिया के साथ साझा कर सके ताकि लोग विश्वास करके अनंत जीवन पा सकें।

यह एक अलग मुहावरा है। जॉन में 0, पहले तीन सुसमाचारों में 30 बार उपदेश देना। और आगे और आगे, पश्चाताप, पश्चाताप और पश्चाताप।

मेटानोइया, यूहन्ना में 0, मत्ती, मरकुस और लूका में लगभग 25 बार। दृष्टांत, यूहन्ना में 45 बार 0 तक। कर संग्रहकर्ता, टोल संग्रहकर्ता, कर संग्रहकर्ता, 20 से 0 तक। मैं पहले संक्षिप्त संख्या और अंत में यूहन्ना के सुसमाचार में दी गई संख्या दे रहा हूँ।

यह हमारे लिए कुछ सवाल उठाता है, है न? हम इसका हिसाब कैसे लगा सकते हैं? जैसा कि मैंने पिछले कुछ सालों में समझाया है, यह कभी-कभी युवा ईसाइयों के लिए समस्याजनक रहा है,

और मुझे इसका अफसोस है, लेकिन मुझे ईसाई विद्वत्ता को उन लोगों के साथ साझा करने की ज़रूरत है जो सीखना चाहते हैं। हम इस तथ्य से वाकिफ़ हैं कि प्रेरितों के काम पर हर टिप्पणी कहती है, और मैंने प्रेरितों के काम को ग़लत नहीं कहा, कि लूका ने प्रेरितों के काम की किताब में उपदेशों और भाषणों का सारांश दिया है। एक बात के लिए, शब्दावली हमेशा लूका की शब्दावली होती है।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि पतरस बोलता है, स्तिफनुस या पौलुस; यह लूका के शब्द हैं। तो, हम क्या कहते हैं? हम कहते हैं कि परमेश्वर ने लूका का उपयोग करके पतरस, स्तिफनुस और पौलुस के शब्दों का सारांश दिया ताकि बड़े तीन का उल्लेख किया जा सके। प्रेरितों के काम के अध्याय 7 में अध्याय भाषण में अपने बड़े संदेश के कारण स्तिफनुस।

बेन विदरिंगटन III इसके लिए एक बेहतरीन स्रोत हैं। उनकी विशाल टिप्पणी, अधिनियमों पर सामाजिक-वाक्यपरक टिप्पणी, अविश्वसनीय है। यह सच है कि कुछ रोमन, ग्रीक और रोमन इतिहासकारों ने भाषणों के साथ बहुत ही लापरवाही बरती।

सच तो यह है कि कभी-कभी वे उन्हें गढ़ लेते थे। और, बेशक, आलोचनात्मक विद्वानों ने कहा कि ल्यूक ने ऐसा किया था। दुख की बात है कि कुछ लोग अभी भी ऐसा करते हैं।

हैनसेन की विद्वत्तापूर्ण टिप्पणी इस तरह की बातों से खराब हो गई है। दूसरी ओर, विदरिंगटन सहित अन्य लोगों को इतिहासकारों की एक पूरी अलग धारा मिलती है, प्राचीन ग्रीक-रोमन इतिहासकार। पॉलीबियस का नाम दिमाग में आता है, और मेरे पास यहाँ नोट्स नहीं हैं।

पॉलीबियस से ज़्यादा कुछ है, लेकिन ये लोग सावधान थे। उन्होंने वक्ता के संदेश को अपने शब्दों में संक्षेप में प्रस्तुत किया, जिसे वे उद्धृत कर रहे थे। लेकिन उद्धृत करने का मतलब शब्दशः नहीं था।

इसका मतलब था कि उनके शब्दों को उनके अपने भाषण में संक्षेप में प्रस्तुत करना। विदरिंगटन ने सही निष्कर्ष निकाला है, जैसा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक का अध्ययन करने वाले अन्य इंजीलवादियों ने भी किया है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में यही है।

और मैं जो कहना चाह रहा हूँ वह यह है कि सुसमाचारों में, यीशु नहीं बदले। वैसे, चौथे सुसमाचार में जो भी बोलता है वह जॉन-स्पीक का उपयोग करता है। यह जॉन की शैली है, और चाहे वह यीशु हो, चाहे वह शिष्यों में से कोई हो, चाहे वह कथावाचक हो, जो जॉन, मैरी या मार्था या निकोडेमस हो, हर कोई जॉन-स्पीक बोलता है।

क्या यीशु ने अपने बोलने का तरीका बदला? हाँ, वे आराधनालय के उपदेश थे, और उन्होंने इस तरह से बात की। यह काम नहीं करता क्योंकि यह सिर्फ़ उनका बोलना नहीं है। इसलिए, यूहन्ना ने यीशु के शब्दों और कार्यों का सारांश दिया।

अब, हम पवित्र आत्मा को इस मामले से बाहर नहीं रखना चाहते। पवित्र आत्मा ने लूका को एक सुसमाचार और दूसरा खंड, प्रेरितों के कार्य लिखने में सक्षम बनाया। उन दोनों खंडों के लिए,

लूका ने अपनी ही शैली में लिखा, लूका 1, 1-4 हमें बताता है कि उसने पागलों की तरह लिखी गई हर चीज़ का अध्ययन किया।

और वह लिखता है, और परमेश्वर यीशु के वचनों और कार्यों का पर्याप्त सारांश देने के लिए उसके शब्दों के माध्यम से पर्यवेक्षण और कार्य करता है। विद्वान यीशु के शब्दों, इप्सिसिमा वर्बा, और यीशु की आवाज़ के बीच अंतर करते हैं। यीशु का इप्सिसिमा वोक्स।

हमारे पास शब्द नहीं हैं, और हमारे पास आवाज़ भी है। यह वह बिंदु है जिसने कभी-कभी मेरे छात्रों को थोड़ा झकझोर दिया है। यह बस यही है कि बाइबल कैसे काम करती है।

हम किसी सिद्धांत से शुरू करके उसे बाइबल पर नहीं थोपते। हम समझते हैं कि बाइबल खुद कैसे काम करती है। बाइबल की अचूकता पर शिकागो वक्तव्य को देखें, जो इंजील ईसाइयों और अचूकतावादियों द्वारा किया गया था, जिन्होंने इस बात पर जोर दिया था कि इंजील धर्मशास्त्रीय समाज में पहले एक योग्यता थी।

आपको अचूकता में विश्वास करना था। शिकागो वक्तव्य में 50 योग्यताएँ दी गई हैं कि इसका क्या अर्थ है और क्या नहीं। वे क्या कर रहे हैं? वे पवित्रशास्त्र के बारे में जो कुछ कहते हैं, उसके प्रति निष्पक्ष होने की कोशिश कर रहे हैं, जबकि पवित्रशास्त्र के उच्च दृष्टिकोण को बढ़ावा दे रहे हैं, समर्थन कर रहे हैं, प्रोत्साहित कर रहे हैं और उसका बचाव कर रहे हैं।

मैं अचूकता में विश्वास करता हूँ, और मैंने हमेशा से ऐसा किया है। जिन लोगों ने मुझे प्रभु के पास पहुँचाया, उन्होंने बाइबल को इसी तरह देखा, और मेरे पास इसे नकारने का कभी कोई कारण नहीं था। क्या मैं बाइबल की हर आयत को समझता हूँ? बिलकुल नहीं।

क्या कोई समस्या है? बेशक, है। क्या वे मुझे रात में जगाए रखते हैं? नहीं। अन्य लोगों को उस तरह के काम पर बुलाया गया था।

मेरा काम बाइबल की शिक्षाओं को समझना था, और इस कोर्स के लिए जॉन की शिक्षाओं को समझना था। मैं यह कहने की कोशिश कर रहा हूँ कि भगवान ने प्रेरित जॉन का इस्तेमाल किया, उनके पूरे जीवन का पर्यवेक्षण किया, जैसा कि बीबी वारफील्ड ने कहा, खासकर जब उन्होंने अपनी कलम को पृष्ठ पर रखा और वही शब्द लिखे जो भगवान चाहते थे कि वे इस्तेमाल करें। उन्होंने यीशु के शब्दों और कार्यों को सटीक रूप से संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए अपनी खुद की शैली का इस्तेमाल किया। इसलिए, जब वे कहते हैं कि यीशु ने ऐसा-ऐसा कहा, तो हमारे पास हमेशा वही शब्द नहीं होते।

हमारे पास यीशु की आवाज़ है। वास्तव में, शब्दों से भी बेहतर, हमारे पास परमेश्वर के शब्दों का सारांश है, और फिर, क्योंकि सभी सुसमाचारों में यह है, यूहन्ना, दूसरों की तुलना में, शब्दों की उनकी प्रेरित व्याख्या। लोगों ने यीशु के शब्दों को सुना और विभिन्न कारणों से उन्हें समझ नहीं पाए।

दोषसिद्धि और ईश्वर द्वारा उन्हें कठोर बनाने का काम, ये दो बातें हैं जो दिमाग में आती हैं, और ये जॉन में सक्रिय हैं। वैसे, जॉन की विशिष्ट शब्दावली के बारे में मेरा यही कहना है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उनकी शब्दावली विशिष्ट है।

उनके पास ऐसे पसंदीदा शब्द हैं जो नगण्य हैं या मौजूद ही नहीं हैं। वे आम तौर पर मौजूद हैं लेकिन मैथ्यू, मार्क और ल्यूक में बहुत कम संख्या में हैं। दूसरी ओर, उनके पास ऐसे सामान्य शब्द हैं जिनका उल्लेख करना उन्हें बिल्कुल भी उचित नहीं लगता या बहुत कम।

मैं यही सबसे अच्छा कर सकता हूँ। व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ। प्रेरित यूहन्ना अक्सर अपने सुसमाचार में व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ देते हैं।

रेमंड ब्राउन ने अपनी एंकर बाइबल कमेंटी में बताया है कि ये नोट्स कई तरह के उद्देश्यों को पूरा करते हैं। वे कई बार नामों और उपाधियों की व्याख्या करते हैं। इसलिए, हम इसे 13:8 में पाते हैं।

मैं इनमें से कुछ बातों का नमूना मात्र देने जा रहा हूँ, क्योंकि उम्मीद है कि सोने से पहले हमें अभी बहुत कुछ करना है। 13:8. यीशु ने मुड़कर देखा कि वे उसके पीछे आ रहे हैं।

इसमें लिखा है कि उसके दो शिष्य थे। उन्हें तुरंत पहचाना नहीं जा सका। और उसने पूछा, तुम क्या खोज रहे हो? और उन्होंने उससे पूछा, हे रब्बी, तुम कहाँ रह रहे हो? और उसने उन्हें उस दिन के बाकी समय के लिए अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित किया।

खैर, यह एक आशीर्वाद था, मुझे यकीन है। लेकिन रब्बी के बाद, जॉन ने इसे शामिल किया है, और ईएसवी इसे कोष्ठक में रखता है, वे उसे कहते हैं, रब्बी, जिसका अर्थ है शिक्षक। इसका मतलब है, अगर जॉन ने इफिसुस से लिखा था, जैसा कि हम मानते हैं, मुख्य रूप से यहूदी दर्शकों के लिए नहीं, जैसा कि मैथ्यू ने अपने सुसमाचार के साथ किया था, वह यहूदी, इस मामले में, उन लोगों के लिए नाम और उपाधियाँ समझाता है जो यहूदी नहीं हैं।

या फिर उसी अध्याय 1 की आयत 42 के बारे में क्या ख्याल है? एंड्रयू अपने भाई शमौन को यीशु के पास लाया। ये शब्द बहुत शक्तिशाली हैं। यहाँ साक्षी विषय को क्रियान्वित किया गया है।

वह अपने भाई को यीशु के पास लाता है। शारीरिक रूप से और शारीरिक रूप से भी बढ़कर, यीशु ने उसे देखा और कहा, तुम शमौन हो, यूहन्ना के पुत्र। शमौन बर-योना, बर-योना।

तुम्हें कैफा कहा जाएगा। यह एक अरामी शब्द है। और इसलिए, यूहन्ना इसका अर्थ बताता है, जिसका अर्थ है पतरस।

ये व्याख्यात्मक या संपादकीय टिप्पणियाँ हैं जो जॉन पाठक की मदद करने के लिए देते हैं। जब हम जॉन की शैली के साथ काम करते हैं, तो हम इस बारे में सोचना चाहते हैं कि वह पाठक को आकर्षित करने के लिए इनमें से कुछ विशेषताओं का उपयोग क्यों करता है, कभी-कभी स्पष्ट

रूप से। यहाँ, गरीब पाठक को यह समझने में मदद करने के लिए कि वह किस बारे में बात कर रहा है।

कभी-कभी, वह प्रतीकों की व्याख्या करता है। 12:33 कहता है, एक तरह से यीशु अपने क्रूस पर चढ़ने की बात करता है, जैसे कि मनुष्य का पुत्र ऊपर उठा लिया गया। आह।

यहाँ यह है। यूहन्ना 12:33. उसने कहा, और मैं, पद 32, जब मैं पृथ्वी से ऊपर उठा लिया जाऊँगा, तो सभी लोगों को अपने पास खींच लूँगा। उसने यह इसलिए कहा ताकि यह पता चल सके कि वह किस तरह की मृत्यु से मरने वाला था।

यूहन्ना 12.33 यूहन्ना 12:32 की व्याख्या क्रूस पर चढ़ने, क्रूस पर चढ़ने से मृत्यु के संदर्भ में करता है। बहुत से पाठक शायद यह नहीं जानते होंगे कि केवल उस अभिव्यक्ति को ऊपर उठाने से। यह एक लंबी कहानी है, लेकिन हमें लगता है कि यह यशायाह 53, 52 के अंत, 53 की शुरुआत से आती है, जो प्रभु के सेवक के ऊपर उठाए जाने, ऊँचे और ऊपर उठाए जाने की बात करती है।

और विडंबना यह है कि जॉन को ऊपर उठाने का दोहरा अर्थ है। उसे सचमुच क्रूस पर चढ़ाया गया है। और बहुत ही विडंबना यह है कि सबसे बुरे लोग उसके साथ यही कर सकते हैं कि उसे क्रूस पर चढ़ाकर भयानक मौत दी जाए।

लेकिन वे उसके साथ जो सबसे बुरा कर सकते हैं, वह है उसके पिता के पास वापस लौटने में तेज़ी लाना। विडंबना यह है कि उसका ऊपर उठाया जाना बदसूरत क्रूस पर चढ़ने और एक ही समय में उत्कर्ष के अर्थ को दोगुना कर देता है। कभी-कभी जॉन गलत धारणाओं को सही करने के लिए कहीं गई अन्य बातों को योग्य बनाने के लिए संपादकीय टिप्पणियों का उपयोग करता है।

इसलिए, यूहन्ना के अध्याय 4:2 में, यीशु द्वारा शिष्यों को बपतिस्मा देने की बात कही गई है। 4:2 को ESV द्वारा सही तरीके से कोष्ठक में रखा गया है। इसमें कहा गया है कि यीशु ने स्वयं बपतिस्मा नहीं दिया, बल्कि केवल उसके शिष्यों ने दिया।

यीशु ने बपतिस्मा देने के अधिकार के अर्थ में बपतिस्मा दिया। लेकिन हम सोचते हैं कि उसने अपने हाथों से बपतिस्मा नहीं दिया, यह समझदारी की बात है। यह समझदारी क्यों है? क्या तुम मजाक कर रहे हो? मुझे गुरु ने बपतिस्मा दिया था।

ओह, मेरा वचन। तो, 4:2 और 6:6 में, यूहन्ना गलत धारणाओं को सही करता है। कभी-कभी, यूहन्ना घटनाओं को एक व्याख्यात्मक टिप्पणी के साथ अन्य घटनाओं से जोड़ता है।

11:2 हमें बताता है कि वह कौन सी मरियम थी। अब, एक व्यक्ति बीमार था, लाज़र, जो मरियम और उसकी बहन मार्था के गाँव बेथानी का निवासी था। यह मरियम ही थी जिसने प्रभु पर इत्र लगाया और अपने बालों से उसके पैर पोंछे।

मैं बस इतना ही कहूंगा कि ऐसा लगता है कि सुसमाचारों में एक से ज़्यादा बार ऐसा हुआ है। लेकिन यहाँ, यूहन्ना ने मरियम की पहचान उस व्यक्ति के रूप में की है जिसने ऐसा किया था। और, ओह, लड़के, मेरा मानना है कि यह घटना इस सुसमाचार में दर्ज नहीं है।

मुझे उम्मीद है कि मैं इन व्याख्यानों में गलत जानकारी नहीं दे रहा हूँ। यह एक ऐसी जगह है, जहाँ जॉन समकालिक परंपरा पर निर्भर है। किसी भी मामले में, यह घटनाओं को अन्य घटनाओं से जोड़कर बना रहा है।

कई बार, यूहन्ना पात्रों की पहचान करने के लिए व्याख्यात्मक नोट्स या संपादकीय नोट्स का उपयोग करता है। इसलिए, यूहन्ना 7:50 निकुदेमुस की पहचान करता है, जिसके बारे में हमने अध्याय 3 में सीखा था। निकुदेमुस, जो पहले उसके पास गया था और जो उनमें से एक था, ने उनसे कहा कि वह महासभा का सदस्य था, और वह पहले भी यीशु के पास आया था, ठीक है, अध्याय 3 में। सुसमाचार में निकुदेमुस का अध्ययन आकर्षक है, और जब हम चर्च का अध्ययन करेंगे तो हम उस पर एक नज़र डालेंगे क्योंकि यूहन्ना चर्च के सिद्धांत को न केवल परमेश्वर के लोगों को सामूहिक रूप से भेड़ों के रूप में, उदाहरण के लिए, जो दाखलता में रहते हैं, बल्कि उन व्यक्तियों को अलग करके सिखाता है जो हमारे लिए आदर्श हैं। और निकुदेमुस एक गुप्त शिष्य का उदाहरण है जो एक सार्वजनिक शिष्य बन जाता है।

वह आदमी यीशु के क्रूस पर चढ़ाए गए शरीर से अपनी पहचान जोड़ता है। यह वाकई आश्चर्यजनक है - बस इतना ही।

जॉन संपादकीय नोट्स देते हैं। वह एक इतिहासकार हैं और धर्मशास्त्री भी हैं। और यहाँ, इन दोनों ही क्षमताओं में, वह अपने शब्दों को समझाने में मदद कर रहे हैं।

गलतफहमियाँ। ओह, ये बहुत ही रोचक हैं। जॉन ने इसमें शामिल किया है... प्रेरित जॉन ने अपने सुसमाचार में गलतफहमियों का बहुत ही प्रभावशाली ढंग से इस्तेमाल किया है।

अक्सर, यीशु के श्रोता उसे गलत समझते हैं। वह आध्यात्मिक वास्तविकताओं के बारे में बात करता है, और उसके श्रोता केवल सांसारिक स्तर पर ही सोचते हैं। यह बहुत ही दिलचस्प है।

आइये हम इन पर एक साथ नज़र डालें। 4:12. यह एक तरीका है जिससे यूहन्ना पाठक और यहाँ तक कि पाठक की भावनाओं को भी शामिल करता है।

मुझे खेद है, 2:20. यीशु ने मंदिर को शुद्ध किया है, जो कि एक बहुत ही निर्लज्ज कार्य है। 2:18, आप हमें इन कामों के लिए क्या संकेत दिखाते हैं? यहूदियों ने कहा, यहूदी नेताओं ने।

यीशु ने उत्तर दिया, "इस मन्दिर को ढा दो, और मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूँगा।" यहूदियों ने कहा कि हेरोदेस को मन्दिर का जीर्णोद्धार करने में 46 वर्ष लग गए।

और आप इसे तीन दिन में फिर से जीवित करने जा रहे हैं? क्या आप पागल हैं? यहाँ आता है... वास्तव में, यह दोनों एक संपादकीय टिप्पणी है। यह उनकी ओर से एक गलतफहमी है, और

यहाँ, जॉन स्पष्ट करता है। लेकिन वह अपने शरीर के मंदिर के बारे में बात कर रहा था, इसलिए, जब वह मृतकों में से जी उठा था।

उसके चेलों को याद आया कि उसने यह कहा था, और उन्होंने पवित्रशास्त्र और यीशु द्वारा कहे गए वचन पर विश्वास किया। 2:20 एक गलतफहमी देता है। और इसका उद्देश्य पाठक को यह कहना है, वाह, यीशु ने अपने पुनरुत्थान की भविष्यवाणी की थी।

यह यूहन्ना के सिनॉटिक्स से भिन्न होने का एक उदाहरण है। सिनॉटिक्स में, मत्ती में कम से कम तीन या चार बार, यीशु भविष्यवाणी करता है कि उसे मनुष्य के पुत्र द्वारा पकड़वाया जाएगा, उसके साथ विश्वासघात किया जाएगा, उसे शास्त्रियों और फरीसियों को सौंप दिया जाएगा, उसे तीसरे दिन सूली पर चढ़ाया जाएगा, और वह फिर से जी उठेगा। यूहन्ना इसे और अधिक प्रतीकात्मक रूप से करता है।

उसने यीशु को धोखा दिया और उसे गिरफ्तार कर लिया। लेकिन यहाँ, उसने यह प्रतीकात्मकता अपनाई है। इस गलतफहमी के ज़रिए, यह शास्त्र की सत्यता की गवाही देता है।

हे भगवान, शिष्यों ने यीशु के शब्दों को शास्त्रों के स्तर पर रखा। श्लोक 22. यह अविश्वसनीय है।

और यह एक गलतफहमी पर आधारित था। तीन, चार बहुत ही मूर्खतापूर्ण है। निकोडेमस इसराइल का शिक्षक है।

मैं इसे अभी ऐसे ही छोड़ता हूँ। बाद में, मैं उसके और सामरी महिला के बीच बहुत बड़ा अंतर दिखाऊंगा। लेकिन यह आदमी न केवल महासभा का सदस्य और एक फरीसी है, बल्कि एक शिक्षक, एक महत्वपूर्ण शिक्षक भी है।

निकोदेमुस, यीशु कहते हैं, जब तक तुम दोबारा जन्म नहीं लेते, तुम परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकते। निकोदेमुस कहते हैं, एक आदमी बूढ़ा होने पर कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह जन्म लेने के लिए अपनी माँ के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश कर सकता है? क्या तुम मजाक कर रहे हो? यह मूर्खता के पैमाने पर सबसे ऊपर है। ओह, जॉन क्या दिखा रहा है? वह यह बहुत बड़ी गलतफहमी दिखा रहा है।

और फिर, निकोदेमुस चीजों के सही पक्ष पर आ जाता है। और रात में यीशु के पास आना, मैं इसके लिए उसकी आलोचना नहीं करता। आना अविश्वसनीय है।

ऐसा लगता है कि वह ईमानदारी से यीशु के बारे में और अधिक जानना चाहता है। लेकिन यीशु उसके साथ सख्ती से पेश आते हैं और कहते हैं, तुम किंडरगार्टन में हो। तुम परमेश्वर के राज्य के बारे में कुछ नहीं जानते।

हे भगवान। आप इस्राएल के शिक्षक हैं। आपकी समस्या क्या है, श्लोक 10? क्या आप इस्राएल के शिक्षक हैं? फिर भी आप इन बातों को नहीं समझते।

क्या आप यह जकेल 36 नहीं जानते? भगवान के लिए, ऐसा ही है। वह असभ्य या असभ्य नहीं है, लेकिन वह मजबूत है। और यही वह चीज है जिसकी निकोदेमुस को जरूरत है।

उसे हिलाने की जरूरत है। और वह यह बेवकूफ़ी भरी बात कहता है। ओह, यह कितनी गलतफ़हमी है।

यह उसकी अज्ञानता को उजागर करता है। और वह कमज़ोर नज़र आता है। अध्याय 7 में, वह यीशु का बचाव करता है।

अध्याय 19 में, वह यीशु के क्रूस पर चढ़े शरीर को दफनाने, उसे कब्र में रखने का अनुरोध करता है। वाह। 4:15, हम इन गलतफ़हमियों पर काम कर रहे हैं।

क्या मैंने इस पर कोई गलती की? हम्म. 4:15. ओह, हाँ, यीशु कहते हैं, जो पानी मैं किसी को ढूँगा वह अनन्त जीवन के लिए उमड़ने वाला पानी बन जाएगा।

यूहन्ना 4:14 में स्त्री ने उससे कहा, “हे प्रभु, मुझे यह जल दे ताकि मैं प्यासी न रहूँ और न मुझे जल भरने के लिए यहाँ आना पड़े।” यह दोहरे अर्थ का उदाहरण है। वह जीवित जल सुनती है।

उसे बहते पानी की आवाज़ सुनाई देती है। और वह सोचती है, यार, क्या मेरे घर के पास कोई ऐसी नदी है जिसके बारे में मुझे नहीं पता? यह बहुत बढ़िया होगा। इतनी दूर आने के बजाय।

और यीशु, बेशक, जीवित जल के बारे में बात कर रहे हैं। वास्तव में, यह जानना थोड़ा कठिन है। या तो यह पवित्र आत्मा है जो अनन्त जीवन देता है या पवित्र आत्मा द्वारा दिया गया अनन्त जीवन है।

मैं कहूँगा कि अनन्त जीवन। मुझे पक्का पता नहीं। लेकिन यह उनके प्रतीकों में से एक है।

जॉन के सुसमाचार के धर्मशास्त्र के अनुसार, उनके पत्रों में पानी, रोटी और प्रकाश उनके तीन बड़े प्रतीक हैं। और यह सही है। और भी प्रतीक।

लेकिन ये तीन बड़ी बातें हैं। वह पवित्र आत्मा द्वारा दिए गए अनन्त जीवन के बारे में बात कर रहा है। वह बहते पानी के बारे में सोच रही है।

वह गलत समझती है। और ईसाई पाठक शायद हंसे। शायद कहे, महिला, आप समझती नहीं हैं।

वह हमें अपनी ओर खींचता है। वह हमें इन माध्यमों से कहानी में शामिल करता है। एक और।

11:50. इसे सबसे बढ़िया पुरस्कार मिलता है। ओह, मुझे माफ़ करें।

मैं गलत जगह पर कूदता रहता हूँ। 6:26. इसे सबसे बड़ी विडंबना का पुरस्कार मिला।

और यह एक गलतफहमी है। लेकिन मैं यह 11:50 पर करूंगा, थोड़ी देर में। लेकिन 6:26 पर, भीड़।

यीशु ने 5,000 लोगों की भीड़ को खाना खिलाया। उन्होंने नावों की गिनती की। और वे समुद्र के दूसरी ओर चले गए।

वे दूसरी तरफ हैं। और वे नावों की गिनती करते हैं। और वे कहते हैं, एक मिनट रुको।

चले नाव में आए थे। यीशु नाव में नहीं आए थे। क्या हो रहा है? वे यहाँ कैसे पहुँचे? यहाँ कुछ गड़बड़ है।

और रब्बी, आप यहाँ कब आए? क्या कोई नाव है जिसके बारे में हम नहीं जानते? वे पानी पर चलने के बारे में सोच भी नहीं रहे हैं। यह तो उनकी शब्दावली में भी नहीं है। लेकिन वह समझता है।

वह हृदय तक जाता है। अन्य सुसमाचारों में, यीशु व्यक्ति को पढ़ता है और कहता है और उनके बुरे विचारों को जानता है और कभी-कभी उन विचारों को संबोधित करता है। यहाँ, वह कहता है, सच में, सच में, मैं तुमसे कहता हूँ, तुम मुझे इसलिए नहीं खोज रहे हो क्योंकि तुमने 20:30, और 31 के अर्थ में संकेत देखे हैं।

ये चिह्न इसलिए लिखे गए हैं ताकि तुम विश्वास करो और अनंत जीवन पाओ, है न? नहीं, नहीं, नहीं। वे उसे इस कारण से नहीं ढूँढ़ रहे हैं। वे एक और मुफ्त भोजन चाहते हैं।

वे वहाँ मुफ्त में कुछ देने के लिए आए हैं। वे एक और मुफ्त बुफे चाहते हैं। यह एक गलतफहमी है।

यह यीशु की उदारता, उनकी पहचान और यहाँ तक कि उनके पापों से उनका सामना करने को उजागर करता है, जो एक अच्छी बात है। एक और विशेषता विडंबना है। रेमंड ब्राउन, फिर से, एंकर बाइबल कमेंट्री, लिखते हैं, मैं उद्धृत कर रहा हूँ, कि यीशु के विरोधियों को उनके बारे में ऐसे बयान देने की आदत है जो अपमानजनक, व्यंग्यात्मक, अविश्वसनीय, या कम से कम अपर्याप्त हैं, जिस अर्थ में वे चाहते हैं।

हालाँकि, विडंबना यह है कि ये कथन अक्सर सत्य होते हैं या किसी अर्थ में अधिक सार्थक होते हैं, जिसका उन्हें एहसास या इरादा नहीं होता। प्रचारक ऐसे कथनों को बस प्रस्तुत करता है और उन्हें अनुत्तरित छोड़ देता है, क्योंकि उसे यकीन है कि उसके विश्वासी पाठक गहन सत्य को देखेंगे। पाठकों को आकर्षित करने के बारे में बात करें।

4:12. 4:12, एक सामरी महिला। लड़के, वह एक अद्भुत यात्रा के लिए तैयार है।

हे भगवान। उसने उससे पानी पीने के लिए कहा और कहा कि अगर उसे पता चल जाए कि वह क्या कर रहा है, तो वह उससे पीने के लिए पानी मांगेगी। और वह, ज़ाहिर है, गलत समझती है।

सर, कुआँ गहरा है और आपके पास बाल्टी भी नहीं है। आप पानी कैसे लाएँगे? और फिर श्लोक 12. क्या आप हमारे पिता याकूब से महान हैं? यूहन्ना ने हमें बताया है कि याकूब का कुआँ यहीं है।

क्या आप हमारे पिता याकूब से महान हैं? यह एक गलतफहमी है, लेकिन यह बहुत विडंबनापूर्ण है। और ईसाई पाठक खुद को नियंत्रित नहीं कर सकते। क्या आप मजाक कर रहे हैं? वह याकूब से महान है क्योंकि निर्माता प्राणी से महान है।

वह याकूब से भी महान है क्योंकि उद्धारकर्ता बचाए गए लोगों से भी महान है। हाँ, वह याकूब से भी महान है। या 7:42 के बारे में क्या ख्याल है? बहुत बार, जैसा कि हमने सर्वेक्षण के सारांश में बताया कि हम क्या कवर करने जा रहे हैं, यीशु के प्रति दो प्रतिक्रियाएँ हैं।

यूहन्ना 740. जब उन्होंने झोपड़ियों के पर्व पर ये शब्द सुने, तो उसने कहा कि वह जीवन की नदियाँ देगा और उस जल की आपूर्ति करेगा जो परमेश्वर ने पर्व पर जल-उछालने की रस्म में दिया था। लोगों ने कहा कि यह वास्तव में भविष्यवक्ता था।

दूसरों ने कहा कि यह मसीह है। ये दोनों सकारात्मक जवाब हैं। लेकिन कुछ ने कहा, क्या मसीह गलील से आएगा? क्या शास्त्र में यह नहीं कहा गया है कि मसीह दाऊद की संतान से आता है और बेथलेहम से आता है, वह गाँव जहाँ दाऊद था? इसलिए, लोगों में उसके बारे में मतभेद था।

कुछ लोगों ने कहा, देखो, ये मूसा की तरह व्यवस्थाविवरण 18 के भविष्यवक्ता के शब्द हैं। वाह। और दूसरे कहते हैं कि यह वादा किया गया है।

यह मसीहा है। दूसरों ने कहा, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं। क्या तुम अपने पुराने नियम को नहीं जानते? यह आदमी गलील से आता है।

हम पुराने नियम से जानते हैं कि मसीहा बेथलेहम से आने वाला है। ईसाई पाठक कहते हैं, अरे! वह बेथलेहम से ही आता है। बाद में, परिवार गलील चला गया।

आप गलत हैं। आप समझ नहीं पा रहे हैं। उसे अस्वीकार करने या कम से कम उससे सवाल करने का आपका कारण वास्तव में उस पर विश्वास करने का कारण है।

क्योंकि वह बाइबिल की उस आवश्यकता को पूरा करता है जिसका आप हवाला देते हैं। सबसे बड़ी विडंबना 11:50 है। हे भगवान।

जब यीशु ने लाज़र को जीवित किया, तो उसने बहुत हलचल मचाई और यहूदी नेतृत्व की समस्याएँ और भी बढ़ गईं, जो यीशु के विरुद्ध थे, चाहे उसने कुछ भी कहा हो या कुछ भी किया हो। वे इसे स्वीकार नहीं कर रहे थे। यूहन्ना 11:45 इसलिए, बहुत से यहूदी जो मरियम के साथ आए थे और उन्होंने जो कुछ उसने किया था, उसे देखा था, उन्होंने उस पर विश्वास किया।

उनके यहूदियों का मतलब यहूदी नेता नहीं है। इसका मतलब यहूदी लोग हैं। लेकिन उनमें से कुछ लोग फरीसियों के पास गए और उन्हें बताया कि यीशु ने क्या किया है।

टाटलटेल्स। इसलिए, मुख्य पुजारियों और फरीसियों ने परिषद, सैन्हेड्रिन को इकट्ठा किया, और कहा, हमें क्या करना चाहिए? क्योंकि यह आदमी बहुत से चिन्ह दिखाता है। बाद में, तल्मूड ने यीशु पर एक जादूगर होने और ये काम करने का आरोप लगाया।

उन्होंने चमत्कारी तत्व को स्वीकार किया, लेकिन उन्होंने इसे ईश्वर का नहीं माना और यीशु को मसीहा या सच्चा पैगम्बर भी नहीं कहा। वह एक झूठा पैगम्बर है। वह शैतानी संकेत कर रहा है, मसीहाई संकेत नहीं।

अगर हम उसे ऐसे ही रहने देंगे, तो हर कोई उस पर विश्वास करेगा और रोमी आकर हमारी जगह और हमारा राष्ट्र दोनों छीन लेंगे। जगह, शायद मंदिर। उनमें से एक, कैफा, जो उस साल महायाजक था, यानी उस दुर्भाग्यपूर्ण साल, ने उनसे कहा, तुम कुछ भी नहीं जानते।

जोसेफस कहते हैं कि सद्कियों की विशेषता अशिष्ट भाषण थी। कैफा इसे दर्शाता है। न ही आप समझते हैं कि यह आपके लिए बेहतर है कि एक आदमी लोगों के लिए मर जाए, न कि यह कि पूरा राष्ट्र नष्ट हो जाए।

उसने यह बात अपनी इच्छा से नहीं कही। बेशक, उसने एक स्तर पर ऐसा कहा, लेकिन आखिरकार, उसने अपनी इच्छा से ऐसा नहीं कहा। लेकिन उस वर्ष एक महायाजक होने के नाते, उसने भविष्यवाणी की कि यीशु राष्ट्र के लिए मरेगा और न केवल राष्ट्र के लिए, बल्कि परमेश्वर के बच्चों को एक करने के लिए भी जो विदेशों में बिखरे हुए थे।

इसलिए, उस दिन से, उन्होंने उसे मार डालने की योजना बनाई। कैफा राजनीतिक लाभ का बयान देता है। यही उसका इरादा है।

लेकिन भगवान, विडंबना, अप्रत्याशितता की बात करें। विडंबनाओं में सबसे बड़ी विडंबना यह है कि उच्च पुजारी, अपनी आधिकारिक क्षमता में, राजनीतिक सुविधा की बात करते हुए, मूल रूप से कह रहे हैं, हमें यीशु को मिटा देना चाहिए। हमें उसे मार देना चाहिए।

हमें उसे खत्म करने की जरूरत है। लेकिन उसके शब्द यीशु के प्रतिस्थापन प्रायश्चित की एक विडंबनापूर्ण, अनपेक्षित भविष्यवाणी है। आपके लिए यह बेहतर है कि एक आदमी लोगों के लिए मर जाए, न कि पूरा राष्ट्र नष्ट हो जाए।

खैर, एक आदमी लोगों के लिए मर गया। आश्चर्यजनक रूप से, प्रेरितों के काम 6 हमें बताता है कि यहाँ तक कि कई पुजारियों यानी लेवियों ने भी उस पर विश्वास किया। क्योंकि यीशु में उनका विरोध करने का साहस था, क्योंकि परमेश्वर ने यीशु के इन शत्रुओं के माध्यम से भी गवाही दी, परमेश्वर ने अनुग्रहपूर्वक कई लोगों को अपने पुत्र को जानने के लिए प्रेरित किया क्योंकि प्रेरितों ने सुसमाचार की घोषणा की।

हम अपने अगले व्याख्यान में जोहानिन शैली के बारे में बात करना जारी रखेंगे, जिसमें चियास्म, भिन्नता और पुराने नियम के विषयों जैसी चीज़ों पर चर्चा की जाएगी।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा जोहानिन धर्मशास्त्र पर उनके शिक्षण के बारे में है। यह सत्र 2, जोहानिन शैली, भाग 1 है।